INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Sanskrit 2nd Language	Date of submission: NA
श्लोकों का अर्थ	Topic: मन: पूतं समाचरेत्	Note: Pl. file in portfolio

श्लोक - 1 दृष्टि से पवित्र करके (अच्छी तरह देख - परखकर) कदम रखना चाहिए, वस्त्र से छान कर पानी पीना चाहिए, सत्य से पवित्र करके वाणी बोलनी चाहिए और मन से पवित्र करके आचरण करना चाहिए ।

श्लोक - 2 धैर्य, क्षमा, मन पर नियंत्रण, चोरी न करना, शुद्धि (बाहरी और आंतरिक स्वच्छता) इन्द्रियों को वस में रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना - ये दस धर्म के लक्षण हैं ।

भावार्थ:

अस्य श्लोकस्य भावः अस्ति यत् धर्मः केवलं बाह्यपूजा पद्धतिः नास्ति, अपितु मानवीयगुणानां समूहः अस्ति। मनुस्मृतौ धर्मस्य दश प्रमुखाणि लक्षणानि (गुणाः) वर्णितानि सन्तिः -

1. धृतिः - प्रतिकूलपरिस्थितौ अपि धैर्यधारणम्।
2. क्षमाः - सामर्थ्यें सति अपि अपराधिनां क्षमाकरणम्।
3. दमः - स्वमनसः उपरि नियन्त्रणम्।
4. अस्तेयम् - चौर्यकार्यं न करणीयम् (अन्यस्य वस्तूनि विना अनुमतिं न ग्रहणम्)।
5. शौचम् - शरीरस्य अन्तः बाह्यं च पवित्रता।
6. इन्द्रियनिग्रहः - ज्ञानेन्द्रियाणां कर्मेन्द्रियाणां च वशीकरणम्।
7. धीः - बुद्धेः सदुपयोगः विवेकशीलता च।
8. विद्याः - आत्मज्ञानस्य अथवा सत्यज्ञानस्य प्राप्तिः ।
9. सत्यम् - मनसा वाचा कर्मणा च सत्यस्य पालनम्।
10. अक्रोध: - क्रोधस्य त्याग: शान्ति च ।

श्लोक - 3 श्रेष्ठ पुरुष जैसा- जैसा आचरण करता है, अन्य सामान्य लोग भी वैसा - वैसा आचरण करने लगते हैं । वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो कुछ (आदर्श) प्रमाण प्रस्तुत कर देता है, सारा संसार उसी का अनुसरण करने लगता है ।

श्लोक - 4 लगातार अभ्यास करने से सभी क्रियाएँ सिद्ध होती हैं, अभ्यास से ही समस्त कलाएँ सीखी जाती हैं । अभ्यास से ही ध्यान और मौन सिद्ध होते हैं; वास्तव में अभ्यास के लिए कुछ भी कठिन (असंभव) नहीं है ।

श्लोक - 5 अधम (नीच) प्रकृति (श्रेणी) के लोग विघ्नों के डर से कार्य आरम्भ ही नहीं करते हैं । मध्यम प्रकृति के लोग कार्य आरम्भ तो कर देते हैं, लेकिन विघ्न आने पर बीच में छोड़ देते हैं, किंतु उत्तम प्रकृति के लोग विघ्नों के बार-बार आने पर भी, एक बार शुरू किए गए कार्य को (सफलता मिलने तक) कभी नहीं छोड़ते हैं ।

श्लोक - 6 परिश्रमी और सिंह के समान पराक्रमी पुरुष के पास ही लक्ष्मी (सफलता और सम्पत्ति) स्वयं आती है । 'भाग्य से ही मिलता है', ऐसा तो कायर लोग कहते हैं । इसलिए भाग्य पर निर्भरता को त्याग कर अपनी पूरी शक्ति से पुरुषार्थ (परिश्रम) करो । अगर ईमानदारी से प्रयत्न करने के बाद भी कार्य सफल न हो, तो उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है (क्योंकि आपने अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया है ।

श्लोक - 7 बिना सोचे-समझे (अचानक) कोई कार्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि विवेकहीनता (अज्ञानता) सबसे बड़ी विपत्तियों का स्थान (कारण) है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति सोच-समझकर कार्य करता है, गुणों की लोभी संपत्तियाँ (लक्ष्मी) स्वयं ही उसका वरण (चुनाव) करती हैं।

श्लोक - 8 कोई भी वस्तु केवल पुरानी होने मात्र से अच्छी (सही) नहीं हो जाती और न ही कोई काव्य केवल नया होने के कारण बुरा (त्याज्य) हो जाता है। विद्वान लोग अपनी बुद्धि से परखकर (परीक्षा करके) ही दोनों में से श्रेष्ठ को स्वीकार करते हैं, जबकि मूर्ख व्यक्ति दूसरों की बुद्धि या बहकावे पर निर्भर रहता है।

*************ISWK/Dept of Sanskrit-11/10/2026/Sushil Sharma **************